श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ४

सप्टेंबर -

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ..... नामकर्म के उदय से जीव सभी को मान्य वचनवाला होता है ।
२. श्रोतेन्द्रिय कमजोर हो तो ..... की वाणी श्रवण नहीं कर सकते ।
३. जो गति करने में ..... है वो सक्रिय ।
४. चौदह स्वप्न सूचित श्री ..... प्रभु माघ सुदि तीज को जन्मे ।
५. जो स्वभाव से ही ..... वाला है वह प्राय : पाप में प्रवर्तमान ही नहीं होता ।
६. तस्स उत्तरीकरण सूत्र से ..... की विशेष शुद्धि होती है ।
७. तारक प्रभु का तारक..... पाने के लिए खुद को उँचा उठना ही होगा ।
८. शुभकर्मो के उदय से अनुकुलता की प्राप्ति होती है जिससे ..... भोगा जाता है ।
९. .....सूत्र में कायोत्सर्ग के आगार तथा समय, स्वरुप और प्रतिज्ञा बताई गयी है ।
१०. श्रीखंड के भोजन में किसी भी ..... का कहीं भी उपयोग न करना ।
११. अंग, उपांग और अंगोपाग की नियत स्थान पर रचना..... कर्म से प्राप्त होती है ।
१२. रुपवान याने ..... रुपवाला है ।
१३. जंतुनाशक का उपयोग हमारी आत्माको ..... बनाता है ।
१४. गुरु भगवंत को शिष्य के केवलज्ञान का ख्याल आते ही ..... पूर्वक उन्हें खमाते है ।
१५. चैत्यवंदन करते समय ..... मुद्रा में बैठना है ।
१६. अभयदान सभी दानो का ..... है ।
१७. श्री चंद्रप्रभ स्वामि ..... वदि सप्तमी को मोक्ष में गये ।
१८. छोटी से छोटी जीव विराधना को दुष्कृत समझकर उसके लिये दिलगीर होना यह ..... सूत्र का प्रधान सूर है ।
१९. श्री श्रेयांसनाथ प्रभु के शासन में प्रथम ..... प्रतिवासुदेव हुये है ।
२०. थाली धोकर पीने के पीछे भी ..... का रहस्य छुपा हुआ है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. सर्वगत याने क्या ?
२. धर्मरत्न प्राप्त करने के लिये किसकी आवश्यकता है ?
३. कांपिल्यपुर के राजा की रानी का नाम क्या था ?
४. ऋषभ का मतलब क्या होता है ।
५. कौओं की तरह आँखे घुमाये वह काउसग्ग का कौनसा दोष है ?
६. घी में उत्पन्न होने वाली इल्ली को क्या कहते है ?
७. अगंभीर व्यक्ति कैसी बुद्धिवाला होता है ?
८. धर्म का प्रथम सोपान कौन ?
९. प्रभु महावीर स्वामी की प्रथम प्रवर्तिनी साध्वीजी कौन थी ?
१०. श्री सुविधिनाथ प्रभु का दुसरा नाम क्या ?
११. कौनसा नाम कर्म जीव को स्वयं का शरीर भारी या हलका न लगने दे ।
१२. श्रावक का जीवन किस पर आधारित है ?
१३. कौन से तीन पद प्रतिक्रमण के बीज माने जाते है ?
१४. श्री वत्स लांछन वाले प्रभु का नाम क्या है ?
१५. मुनिराज के गुरु का नाम क्या था ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. छीअेणं २) पहीण ३) कवड्डय ४) सपअेसा ५) गमणागमणे ६) रयणं ७) उदेहिया ८) महिया
९. आइम १०) कता ११) जसं १२) संदिसह १३) तिमिर १४) तिथ्थयरं १५) मोणेणं १६) अलस
१७. विसल्ली १८) खगई १९) इलिया २०) अणंत

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) कीलिका	१) कषाय	६) तप	६) संघयण
२) सुरु	२) एकावली	७) धर्म साधना	७) पुष्पवृष्टि
३) लकडी के कीडे	३) मोक्ष	८) देव-गुरु	८) मेर
४) चंडादेवी	४) तीर्थ	९) धर्मरुपी	९) दक्षिणी
५) रस	५) वासुदेव	१०) पुरुषसिंह	१०) अनुमोदना

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. आयंबिल कितनी मिनट मे कर लेना चाहिए ?
२. श्री अनंतनाथ प्रभु के परिवार में साध्वीयाँ कीतनी हजार थी ?
३. इरियावही के कितने भेदों से 'मिच्छामि दुक्कडं'' दिया जाता है ?
४. पुण्य कितने प्रकार से भोगा जाता है ?
५. मार्गणा कितनी है ?
६. श्रावक के गुण की संख्या कितनी ?
७. डांस कितनी इन्द्रियवाला जीव है ?
८. काउसग्ग में लगते दोष के प्रकार कितने ?
९. श्री सुविधिनाथ प्रभु के गणधर कितने ?
१०. अरिहंत परमात्मा के प्रतिहार्य कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. मेथी वगैरह के सुखाये पत्तो में छोटे छोटे सूक्ष्म कुंथुआ जीवो का निर्माण होता है ।
२. नंदिषेण और हरिकेशी कुरुप थे ।
३. गुंगे की तरह हुं हुं करे वह मदिरा दोष ।
४. श्रावक का आठवां गुण दयालु है ।
५. पुण्य सुंदरता से समझ जाये तो पाप के चक्कर अटक जायें ।
६. श्री वासुपूज्य स्वामी महिष लांछन वाले और श्वेतवर्ण वाले थे ।
७. बोड अचार अभक्ष्य है ।
८. अन्नत्थसूत्र में 'काय' से झाणेणं तक स्वरुप है ।
९. जीवास्तिकाय नित्य है ।
१०. नमिनाथ का दुसरा नाम अरिष्टनेमि है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. शास्त्र कहते है हमने ओघे और मुहपति के मेरू पर्वत जितने ढेर किये है ।
२. मनमें इच्छा हो और वस्तु सामने आजाये ।
३. श्रावक का जीवन सदा धर्म की निंदा हो ऐसे वर्तन से दूर होता है ।
४. चार लाख इकत्तर हजार श्राविकायें इतना परिवार था ।
५. मैं पापसे पीछे हटना..... मुक्त होना चाहता हुं ।
६. खिचडी और कच्ची छास न खायें ।
७. बापू ने एक दिन का उपवास कर डालना चाहिए तो स्वास्थ भी अच्छअ रहेगा ।
८. मुझे सिद्धपद मोक्ष दो ।
९. दूसरों को प्रिय लगे ऐसी सुलक्षणी चाल दिलाता है ।
१०. अपने नित्य जीवन में इस प्रकार की जीव विराधना टालनी है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. पुण्य बंध के नौ प्रकार २) श्री अनंतनाथ भगवान का परिवार ३) छः प्रकार के संघयण
४. तस्स (उतरीकरण) सूत्र का अर्थ ५) विदल

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अॅकेडमी, श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालीसगांव - ४२४ १०१. जि. जलगांव, मो. ९०२८२४२४८४
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com